RAS MAINS TEST SERIES 2018

PAPER –II GENERAL KNOWLEDGE AND GENERAL STUDIES
Unit-II - **MANAGEMENT**

नोटः सभी प्रश्नों के उत्तर दें। निम्न प्रश्नों का उत्तर 15-15 शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक निर्धारित है।

1. समाजशास्त्र का जनक किसे कहते है ?

उत्तरः—अगस्त कांट को समाजशास्त्र का जनक कहते है क्योंकि सर्वप्रथम कांट ने ही 'सोशल फिजीक्स' विषय बनाया जिसे 1838 में 'सोशोलोजी' नाम दिया गया ।

2. प्रभुजाति (Dominant caste) से क्या तात्पर्य है ?

उत्तरः— श्रीनिवास के अनुसार किसी क्षेत्र विशेष में पायी जाने वाली जाति जिसका संख्या बल अधिक हो, आर्थिक व राजनैतिक स्थिति सुदृढ हो, प्रभुजाति कहलाती है।

3. विसंस्कृतिकरण से क्या आशय है ?

उत्तरः- मजुमदार द्वारा प्रतिपादित अवधारणा, जिसके अनुसार जब कोई उच्च हिन्दु जाति अपनी जीवन शैली को त्यागकर निम्न जातियों की जीवनशैली का अनुसरण करे, तो यह प्रक्रिया विसंस्कृतिकरण कहलाती है।

4. जाति के संदर्भ में प्रजातीय (Racial) सिद्वान्त का उल्लेख करें ?

उत्तरः-इस सिद्धान्त के अनुसार प्रजातीय मिश्रण एवं अनुलोम विवाह के कारण जातियों की उत्पति हुई, इसे जाति का वैज्ञानिक सिद्धान्त माना जाता हैं ।

5. जाति के धार्मिक सिद्धान्त की आलोचना क्यों की जाती है ?

उत्तरः-इसके अनुसार जाति को केवल एक धार्मिक संस्था माना गया जबकि यह एक सामाजिक संस्था है। इसके अतिरिक्त यह सिद्धांत तार्किक प्रतीत नहीं होता।

6. जी.एस. धुरिये द्वारा प्रदत्त जाति(caste) की विशेषताओं का वर्णन कीजिए ?

उत्तरः-जाति एक सामाजिक समूह है। जिसकी सदस्यता जन्म से प्राप्त होती है, यह समाज की खण्डात्मक संरचना प्रदर्शित करती है। इसका प्रत्येक खण्ड अन्य खण्डों से उच्च/निम्न स्तरीय संबंध रखता है। जिसे संस्तरण व्यवस्था कहते है। यह विभिन्न प्रतिबन्धों एवं निर्योग्यताओं से युक्त है जो कि अन्तः विवाह को ही स्वीकार्य मानती है व व्यवसायिक गतिशीलता का निषेध करती है एवं इसके सदस्यों पर भोजन व सामाजिक सहवास संबंधी प्रतिबंध लगाती है। इस व्यवस्था में उच्च वर्ग को नागरिक एवं धार्मिक विशेषाधिकार प्रदान किए गये।

7. संस्कृतिकरण की आलोचनात्मक व्याख्या (Critically explain) करें ?

उत्तरः-संस्कृतिकरण की प्रक्रिया जटिल, दीर्घकालिक व परिवर्तन अत्यधिक धीमा होता है मजूमदार के अनुसार संस्कृतिकरण लम्बवत गतिशीलता के स्थान पर क्षैतिज गतिशीलता (अपने समकक्ष समूह में श्रेष्ठता) की प्रक्रिया है। इस अवधारणा में विसंस्कृतिकरण प्रक्रिया की उपेक्षा की गई है। योगेन्द्र सिंह के अनुसार स्वयं द्वारा अपनी ही संस्कृति के पुर्नग्रहण के वर्तमान प्रचलन की व्याख्या इस सिद्धान्त में नहीं की गई। श्रीनिवास स्वयं भी इसे जटिल, विषम व विरोधाभासी मानते है। यह केवल स्थिति परिवर्तन प्रदर्शित करता है, संरचनात्मक परिवर्तन नही।

8. संस्कृतिकरण की विशेषताओं का संक्षिप्त विर्णन कीजिए ?

उत्तरः-
1. संस्कृतिकरण जाति संरचना में गतिशीलता को व्यक्त करती है।
2. संस्कृतिकरण की ईकाई एक व्यक्ति न होकर पूरी जाति/समूह है अर्थात सामुहिक गतिशीलता मे सहायक है।
3. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया केवल पदमूलक परिवर्तन से संबंधित है न कि संरचनात्मक परिवर्तन से।
4. संस्कृतिकरण संदर्भ समूह पर आधारित है। सन्दर्भ समूह वह समूह है जिसके हम वर्तमान में सदस्य नहीं है किन्तु भविष्य में बनना चाहते है।
5. संस्कृतिकरण का संबंध अग्रिम समाजीकरण से है।
6. संस्कृतिकरण प्रभुजाति के सांस्कृतिक प्रतिमान का अनुसरण है। भिन्न-भिन्न मॉडल में भिन्न आदर्श(ब्राह्मण/क्षत्रिय/वैश्य) बताए गए है।
7. संस्कृतिकरण सामाजिक परिवर्तन का आधार है।

सारथि एकेडमी

8. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में विरोध की प्रबल संभावना बनती है। इसका अप्रत्यक्ष अर्थ उच्च का सुलभ हो जाना, अतः उच्च जातियों द्वारा सामान्यतः विरोध किया जाता है।

9. संस्कृतिकरण का अर्थ केवल ब्राह्मणीकरण नहीं है।

सारथि एकेडमी